3. राजवंशों का बनना

(सन् 400 से सन् 1200 की बात)

तुमने बहुत से राजाओं और राजपरिवारों के बारे में सुना होगा। पर सोचो, कोई राजा कैसे बनता होगा? अगर कोई परिवार यह कहे कि हम बाकी गांववालों पर राज करेंगे तो क्या लोग उनकी बात मानेंगे? इस विषय पर कक्षा में चर्चा करो। सब लोग अपनी अपनी राय दें। फिर इस पाठ को पढ़ना शुरू करो।

सन् 400 से सन् 1200 के बीच के समय में भारत में हर जगह पर राजा होने लगे थे। जिन जगहों पर पहले कभी राजा नहीं हुए थे वहां भी राजा बन गए थे। हर जगह पर राज़ा कैसे बने-आओ इसके बारे में कुछ सोचें और समझें।

धनी व ताकतवर परिवार

हर क्षेत्र में खेती फैल गई थी, हर क्षेत्र में घनी आबादी बस गई थी, खूब सारे गांव बस गए थे। जैसा कि होता है, हर इलाके में एक दो परिवार धनी और महत्वपूर्ण बनने लगे। शायद शुरू में उनका परिवार काफी बड़ा रहा होगा। उनकी खेती भी बड़ी रही होगी। ऐसे परिवारों की आसपास के क्षेत्र में धाक भी ज़रूर रही होगी। वे शायद लोगों को ज़रूरत के समय मदद कर देते थे और लोग अपने झगड़े व समस्याएं लेकर उनके पास आते थे।

ऐसे कई परिवार अपने क्षेत्र में सिंचाई के नए साधन लगा कर खेती भी फैलाते थे। वे अपने धन से कुएं, बावड़ियां, नहरें, तालाब बनवाते थे। वे नए इलाकों का जंगल साफ करके खेत बनवाते थे। नए गांव बसाते थे।

हर इलाके में एक दो परिवार धनी और ताकतवर बने।

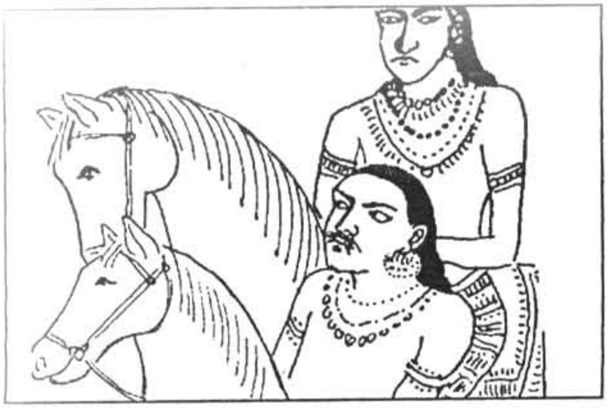

धनी और ताकतवर लोगों ने राजा बनना चाहा।

वे दूसरे लोगों को इन नए गांवों में ला कर बसाते थे। इस तरह बसाए गए लोग ताकतवर परिवारों से दब कर रहा करते थे।

ताकतवर परिवारों की ज़मीन पर काम करने के लिए कई मज़दूर होते थे और उनकी सेवा में बहुत से नौकर चाकर रहा करते थे।

ऐसे बड़े परिवार आसपास के लोगों को डरा-धमका कर भी रखते होंगे ताकि सब लोग उनकी बातें सुनें।

इस तरह धीरे-धीरे हर क्षेत्र में वहां के बड़े परिवारों का स्थान मज़बूत होने लगा। शायद साधारण लोग ऐसे परिवारों को खुश रखने के लिए उन्हें खास मौकों पर भेंट भी लाकर देने लगे।

ताकतवर परिवारों की ताकत के दो कारण रेखांकित करो।

ताकतवर परिवारों का दूसरे लोगों पर क्या असर पड़ा-दो बातें रेखांकित करो।

धनी व ताकतवर परिवारों ने राजवंश बनने की कोशिश की

ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे हर क्षेत्र के ताकतवर परिवार सोचने लगे- "क्यों न हम इस इलाके के राजा बनें? मौर्य वंश या गुप्त वंश की तरह हमारा भी वंश राजवंश बने? क्यों न हमारा परिवार इस क्षेत्र में राज्य करे और शासन चलाए और यहां के लोग हमें नियमित रूप से कर व लगान दें? फिर हम और धनी और ताकतवर हो जाएंगे।"

पर लोग किसी भी व्यक्ति को अपना राजा ऐसे ही तो नहीं मान लेते। लोग क्यों अपने बीच में से एक परिवार को राजवंश मानें? कई जगहों पर तो लोगों के बीच अपना कोई राजा पहले कभी हुआ ही नहीं था। इसलिए जब उनमें से कोई व्यक्ति पहली बार राजा बनने की कोशिश करने लगा तो उसे लोगों को मनवाने के लिए बहुत प्रयास करने पड़े।

ताकतवर परिवार चाहने लगे कि ....

उनके सामने समस्या थी कि ....

लोगों को मनवाने के लिए एक काम वे करने लगे। वे ऐसा बताने लगे कि वे महान ऋषियों, देवताओं और राजाओं के वंश के लोग हैं। इस समय भारत में हर क्षेत्र के राजा ऐसी बातें करने लगे। ऐसी बातों का एक उदाहरण पढ़ो। जबलपुर क्षेत्र में कलचूरी परिवार के लोग राजा बन रहे थे। वे अपने परिवार का परिचय इस प्रकार देते थे-

वंशों का परिचय अर्थात् वंशावलियां

"सबसे पहले विष्णु हुए। उनकी नाभी से ब्रह्मा का जन्म हुआ। उनसे जन्मे अत्री ऋषि। अत्री से जन्मे चन्द्रमा। चन्द्रमा से जन्मे बुध। उनसे जन्मे राजा पुरूरवस। पुरूरवस के कुल में भरत हुए। राजा भरत के कुल में हैहैय परिवार हुआ। हैहैय परिवार में राजा अर्जुन हुए। अर्जुन के कुल में कोक्कल का जन्म हुआ। कोक्कल ने कलचूरी वंश की शुरुआत की।"

कलचूरी वंश के लोग अपना संबंध किन देवताओं से बता रहे थे?

किस ऋषि से बता रहे थे?

किन राजाओं से बता रहे थे?

इसी तरह कई परिवार जो राज परिवार बनने की कोशिश कर रहे थे, अपने आपको चन्द्रवंशी पाण्डवों के वंश का बताते थे, कई लोग अपने आपको सूर्यवंशी

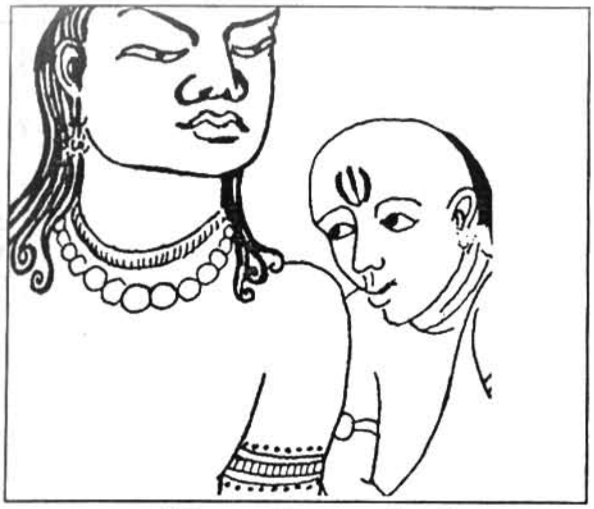

राजाओं ने ब्राह्मणों का सहयोग लिया

रामचन्द्र का वंशज बताने लगे तो कई परिवार यदुवंशी कृष्ण के वंश को अपना वंश बताने लगे। कुछ परिवार ये कहने लगे कि वे वशिष्ठ ऋषि के अग्नि कुण्ड से उत्पन्न हुए हैं।

हर क्षेत्र के धनी और महत्वपूर्ण परिवारों को ऐसी बातें कहने की ज़रूरत क्यों लग रही थी?

तुम्हारे विचार में वे इन बातों से लोगों पर क्या प्रभाव डालना चाहते थे?

शायद वे ताकतवर परिवार लोगों को विश्वास दिलाना चाहते थे कि वे बहुत ऊंचे और महान कुल के हैं। वे सोचते होंगे कि लोग तभी उन्हें राजा मानेंगे। तभी लोगों के मन में उनके प्रति भय और आदर का भाव बैठेगा। लोगों पर प्रभाव डालने की ज़रूरत रही होगी नहीं तो इस समय के सब नए-नए राजवंश अपने परिवार के बारे में ऐसी बड़ी-बड़ी बातें क्यों कहते?

ताकतवर परिवार अपने वंश का रिश्ता इन वंशों से बताने लगे थे ....

ब्राह्मणों का बसना

अपने परिवार के बारे में बड़ी-बड़ी बातें यूं ही नहीं कही जा सकती थीं। जब प्रतिष्ठित लोग उन बातों का समर्थन करें तभी लोगों पर इनका असर पड़ सकता था। राजाओं ने इस काम में ब्राह्मणों का सहयोग लिया।

ब्राह्मणों की बहुत प्रतिष्ठा थी। वे धर्म और ज्ञान को जानने वाले लोग थे। उन्हें राजकाज चलाने का भी लम्बा अनुभव था क्योंकि वे गंगा-यमुना के मैदान में रहते थे। गंगा-यमुना के मैदान में बहुत पहले से राजा हुआ करते थे। इसलिए ब्राह्मणों को राज्य की व्यवस्था करने का अनुभव था।

राजाओं ने दूर-दूर से प्रतिष्ठित ब्राह्मणों को बुलाकर अपने राज्य में बसाया। उन्हें अपने दरबार में बड़ा सम्मान दिया। बसने के लिए ब्राह्मणों को गांव और ज़मीन दान में दी।

जब राजा किसी ब्राह्मण को दान देते थे तो प्रमाण के लिए एक ताम्र-पत्र पर सारी बात लिखवा कर देते थे। (ताम्र-पत्र का अर्थ है तांबे का पट्टा) राजा ब्राह्मणों को दो तरह के दान देते थे - कभी-कभी वे दान में ज़मीन देते थे। इससे वह ब्राह्मण ज़मीन का पूरा मालिक बन जाता था।

कभी-कभी राजा ब्राह्मण को किसी गांव का लगान अपने पास रख लेने का अधिकार दे देते थे। यानी दान दिए गए गांव के किसान जो लगान राजा को देते थे, वे लगान राजा ब्राह्मण को दान कर देता था। इस तरीके से बहुत से ब्राह्मण बसाए गए।

राजाओं ने ब्राह्मणों को दान दे कर राज्य में बसाया

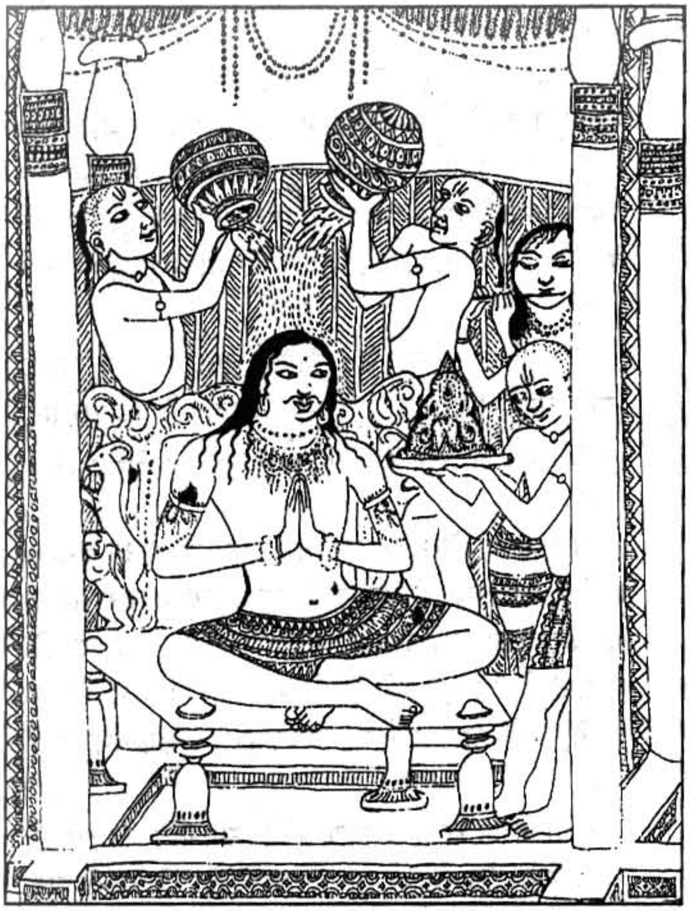

ब्राह्म्ण मंत्रों के साथ राजा का अभिषेक करते हुए।

ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा थी क्योंकि 1..................... 2.....................

ब्राह्मणों ने राजाओं को .... व ...... में सहयोग दिया।

ब्राह्मणों को दो तरह के दान मिले - पहले में वे .... के मालिक बने। दूसरे में उन्हें किसी गांव से राजा को मिलने वाला सारा .... मिलता था।

ब्राह्मणों का राजाओं को सहयोग

ब्राह्मणों ने राजाओं के लिए उनके परिवार का परिचय अर्थात् वंशावलियां तैयार कीं। ब्राह्मण जब किसी राजा को देवताओं और ऋषियों के कुल का बताते थे तो लोगों पर इस बात का असर पड़ता था।

ब्राह्मणों ने राजाओं को बड़े-बड़े यज्ञ करने में मदद की। ब्राह्मणों के सहयोग से उस समय के राजा अश्वमेघ और राजसूय जैसे बड़े यज्ञ करने लगे। ऐसे यज्ञ छोटे जनपदों के समय में ही होते थे। ब्राह्मण ऐसे प्राचीन यज्ञ फिर से करवाने लगे।

इससे भी लोगों पर ज़रूर असर पड़ा। राजाओं का दबदबा और रौब बहुत बढ़ा होगा।

सेना

लोगों पर रौब जमाने के लिए हर जगह के ताकतवर परिवारों ने ये सब प्रयास किए। पर साथ ही साथ, वे अपनी सेना भी जुटाने लगे। उन्होंने हथियार, हाथी, घोड़े जुटाए और सैनिक रखे। लोग अगर उनकी बात न मानें तो उन्हें अस्त्र-शस्त्रों के बल पर डराया धमकाया जा सकता था।

जगह-जगह राजवंश हुए

इन तरीकों की सहायता से जब कोई धनी और महत्वपूर्ण परिवार 50-100 गांवों पर अपना अधिकार जमा लेता तो अपने आपको राजवंश कहने लगता था। उस परिवार का मुखिया राजा कहलाता था। राजा और उसके परिवार के लोग अपने अधिकार के गांव व शहरों पर हुकूमत करते। वे लोगों से लगान वसूल करने लगते, लोगों पर अपने आदेश चलाने लगते।

तुम आगे के पाठ में पढ़ोगे कि ये राजा और उनके परिवार के लोग किस तरह शासन चलाते थे।

कुछ परिवार या वंश सौ गांवों पर अपना अधिकार जमा पाए व राजा बन गए, तो कुछ परिवार 200-300 गांवों पर अपना अधिकार जमा पाए और अपने आपको महाराजा कहने लगे।

हर क्षेत्र में एक स्थानीय राजवंश उभर कर आ रहा था। इस सबका नतीजा तुम मानचित्र 1 में देखो। सन् 975 से 1250 के बीच भारत में जितने राजवंश थे यह उनका नक्शा है। देखो कि भारत के हर क्षेत्र में छोटे बड़े कई स्थानीय राजवंश थे।

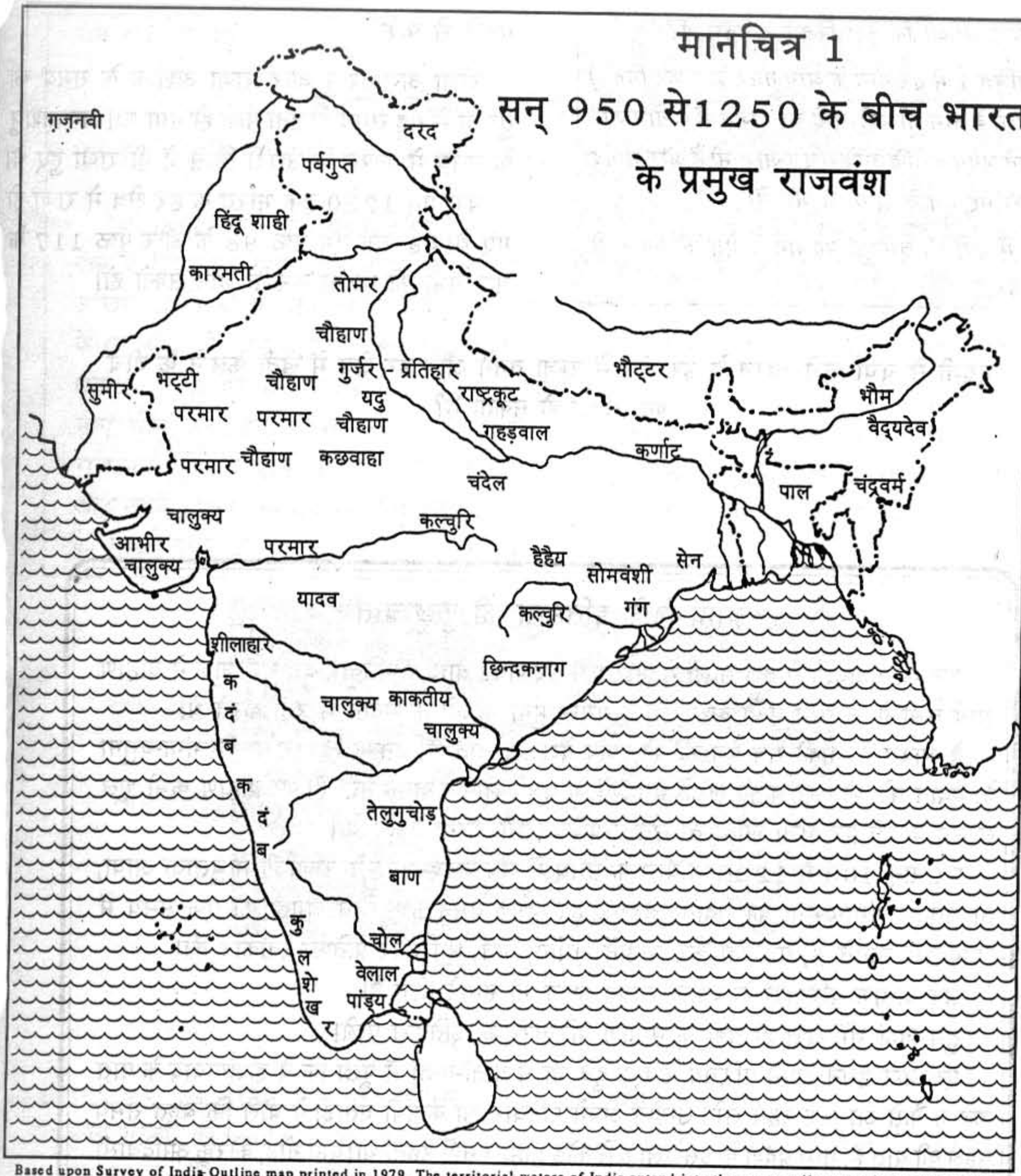

मानचित्र 1

सन् 950 से1250 के बीच भारत के प्रमुख राजवंश

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.
c. Govt of India copyright.

पैमाना: 1 से. मी. = 200 कि. मी.

- भारत की वर्तमान बाह्य सीमा

गिन कर बताओ कि कुल कितने राजवंश थे?

(मानचित्र 1 में हर नाम के आगे नंबर डाल कर गिनो)

राजवंशों के नाम भी पढ़ो। तुम्हें कई राजवंशों के नाम जाने पहचाने लगेंगे क्योंकि उनके वंशज आज भी हैं और शायद तुम्हारी पहचान के लोगों में भी हों।

नक्शे में ढूंढो की तुम्हारी पहचान के ऐसे कौन-कौन से नाम हैं।

पहले से फर्क

राजा अजातशत्रु और राजा अशोक के समय की तुलना में यह समय कितना फर्क हो गया था। अजातशत्रु के समय में भारत के उत्तरी हिस्से में ही राजा हुए थे।

पर, सन् 1250 तक भारत के हर क्षेत्र में राजा हो गए थे। यह बात तुम पृष्ठ 98 के और पृष्ठ 117 के मानचित्रों की तुलना कर के जान सकते हो।

गुरुजी से चर्चा करो भारत के हर क्षेत्र में राजा बनने और हर क्षेत्र में खेती फैलने के बीच क्या संबंध हो सकता है?

ब्राह्मणों के इतिहास की कुछ बातें

दान की सहायता से कई सालों में भारत में हर जगह ब्राह्मण परिवार बस गए। शुरू में ब्राह्मण आर्य कबीलों के साथ हुआ करते थे। वे गंगा-यमुना नदियों के मैदान में रहा करते थे।

वे भारत के बाकी सब इलाकों को "पाप देश" समझते थे। उनका विचार था कि गंगा-यमुना के मैदान को छोड़कर बाकी जगहें ब्राह्मणों के बसने लायक जगहें नहीं हैं। जो ब्राह्मण कभी भूल से उन जगहों पर चला जाता तो उसे प्रायश्चित भी करना पड़ता था।

पर, सन् 400 से 1200 के बीच के समय में जब जगह-जगह के राजाओं से बुलावा आया, तो ब्राह्मण गंगा-यमुना का मैदान छोड़कर हर जगह बसने गए। जिन जगहों को एक समय में "पापदेश" मानते थे, वहां जा कर उन्होंने ज़मीन, गांव, धन और प्रतिष्ठा स्वीकार की।

उन ब्राह्मण परिवारों के वंशज शायद आज भी हमारे बीच हैं।

तुम जहां भी रहते हो वहां के ब्राह्मण परिवारों का इतिहास पूछो।

एक बार हमने अपने परिचय के एक दुबे जी से बातों-बातों में पूछा कि वे होशंगाबाद के पास कब व कैसे आ कर रहने लगे। उन्होंने अपने परिवार की कहानी बताई। वे बोले कि बहुत समय पहले की बात है। मध्य प्रदेश के इस इलाके में कोई ब्राह्मण नहीं रहता था। यहां गोंड, कोरकू आदिवासी लोग रहते थे। फिर यहां के राजा ने उत्तर प्रदेश के इलाके से ब्राह्मणों के लिए बुलावा भेजा। राजा के बुलावे पर दुबे जी के पूर्वज यहां आकर बसे। राजा ने उन्हें बसने के लिए ज़मीन दी।

तुम अगर पूछताछ करोगे तो शायद तुम्हें भी कुछ परिवारों की ऐसी कहानी पता चलेगी। हो सकता है तुम्हें किसी ब्राह्मण परिवार के पास दान का ताम्रपत्र ही मिल जाए!

मन करे तो पढ़ना......

ब्राह्मणों को दिए गए दान का उदाहरण

गुजरात में अलीना नाम की जगह से यह ताम्रपत्र मिला। यह सन् 766 में जारी किया गया था-

"परमभट्टारक महाराजधिराज परममाहेश्वर शीलादित्य ध्रुवभट ने महिलबलि नाम का गांव दान में दिया। यह गांव उपलहेट पाथक में बसा है और आनंदपुर के रहने वाले ब्राह्मण भट्ट आखण्डलमित्र को दान में दिया जाता है, ताकि वे बलि, चरू, वैश्वदेव, अग्निहोत्र व अतिथि सत्कार के यज्ञ कर सकें। यह दान उन्हें सब अधिकारों के साथ दिया जाता है। उन्हें गांव के किसानों से लगान लेने का हक है, उनसे बेगार करवाने का हक है, अपराधियों से जुर्माना लेने का हक है, भाग, भोग, कर, हिरण्य जैसे करों की वसूली करने का हक है। दान दिए इस गांव की तरफ कोई राजकीय अधिकारी हाथ भी नहीं उठाएगा। जब तक चांद और सूरज चमकेंगे तब तक आखण्डलमित्र और उसके वंशज इस गांव को भोग सकते हैं........यह दान पत्र ज्येष्ठ माह के शुक्लपक्ष की पंचमी को लिखा गया......"

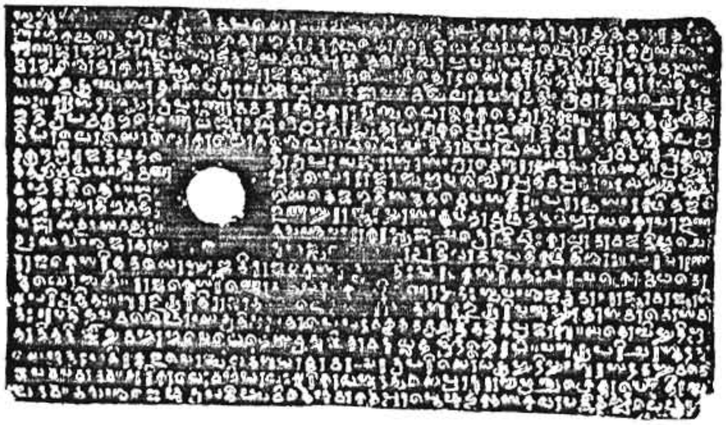

एक ताम्र-पत्र का चित्र

<u>अभ्यास प्रश्न</u>

1. हर क्षेत्र में कैसे परिवार तांकतवर बने? उनके बारे में तीन चार बातें लिखो।
2. अपने परिवार को महान और ऊंचा बताने के लिए ताकतवर परिवारों ने क्या कहा? इस काम में उन्होंने किस की सहायता ली?
3. राजाओं ने ब्राह्मणों को अपने राज्य में क्यों बुलाया?
4. राजाओं ने ब्राह्मणों को किस तरह का दान दे कर बसाया?
5. क) ताकतवर परिवारों ने राजवंश बनने के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाए - तीन तरीकों का वर्णन करो।
   ख) क्या आज तुम्हारे गांव या शहर का कोई ताकतवर परिवार इन तरीकों को अपना कर राजा बन सकता है?